2.5.5 संस्थान की संस्कृत भाषा में प्रश्न पत्र तैयार करने की नीति और छात्रों को संस्कृत में उत्तर लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की व्यवस्था है।

Institution has a policy of question paper setting in Sanskrit language and mechanism of encouraging students in writing answers *in Sanskrit.*

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा में प्रश्न पत्र तैयार करने की नीति और छात्रों को संस्कृत में उत्तर लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की व्यवस्था है। यह विश्वविद्यालय भारतीय शाखाओं के ज्ञान के शिक्षण को प्रोत्साहित करता है। ज्ञान की वे शाखाएँ वेद, वैदिक भाग, दर्शन, शास्त्र, पुराण और काव्य हैं। ये सभी शाखाएँ संस्कृत में लिखी गई हैं। इस प्रकार वेदों जैसी ज्ञान की शाखाओं की उचित समझ के लिए संस्कृत पर विश्वास किया जाना चाहिए। मूल भाषा के प्रत्यय को दूसरी भाषा में समझे जाने की संभावना अधिक होती है। इसलिए, संस्कृत विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रम संस्कृत में संरचित हैं। विषयों को संस्कृत माध्यम में पढ़ाया जाता है। परीक्षा का लिखित माध्यम संस्कृत और देवनागरी लिपि है।

छात्रों को विश्वविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों में दो प्रकार के छात्र होते हैं। कुछ लोग पारंपरिक विधि से अपनी शिक्षा को प्राप्त करते हैं। अन्य कुछ लोग आधुनिक विधि से शिक्षा को प्राप्त करते हैं । जिन छात्रों ने पारंपरिक पद्धति से अध्ययन करके इस क्षेत्र को सीखा है, वे कक्षा में संस्कृत में पढ़ाए गए पाठ को समझने में सक्षम हैं। और उनकी पहचान लेखनशैली से होती है तथापि आधुनिक पद्धति से अध्ययन करने के बाद प्रवेश पाने वाले छात्रों को पाठ को समझने और संस्कृत में लिखने में कठिनाई का अनुभव होता है। इसलिए प्रवेश के साथ-साथ संस्कृत सम्भाषण शिविर एवं कार्यशाला भी आयोजित की जाती है ।जिससे वे संस्कृत बोलने और लिखने में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शास्त्र एवं शिक्षक पाठ्यक्रमों में नव्य व्याकरण, प्राचीन व्याकरण, साहित्य, सिद्धांतज्योतिष्, फलितज्योतिष्, सर्वदर्शन, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, वेद, पौरोहित्य, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, सांख्य योग, नव्य न्याय, प्राचीन वैशेषिक, मीमांसा, अद्वैत सम्मिलित हैं। क्रमश: वेदान्त आदि विषय हैं। ये विषय संस्कृत माध्यम में ही पढ़ाए जाते हैं।

शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम में, छात्र आधुनिक भाषाओं के विषय को छोड़कर एक पेपर संस्कृत में पढ़ते हैं। मनोविज्ञान में छात्रों का शिक्षण अभ्यास और व्यावहारिक परीक्षाएँ संस्कृत में आयोजित की जाती हैं। विद्यावर्धि पाठ्यक्रम में शोध करने वाले छात्र अपना सिद्धान्त संस्कृत माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। विश्वविद्यालय का सामान्य नियम यह है कि केवल संस्कृत में लिखी शोधप्रबन्ध ही परीक्षा के लिए

पात्र है। उनके शोध का मूल्यांकन और परीक्षण संस्कृत में किया जाता है। यह छात्रों को अपने शोध के साथ-साथ संस्कृत भाषा की एक विशिष्ट गति प्राप्त करने का एक उत्तम अवसर प्रदान करता है।

आचार्य पाठ्यक्रम के क्रम से लेकर शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम के क्रम तक निर्धारित, प्रत्येक विषय में संस्कृत भाषा में निहित सिद्धांतों पर शोध करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। यह उद्देश्य संस्कृत के माध्यम से शिक्षण द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस पाठ्यक्रम द्वारा, पारंपरिक धारा में अध्ययन करके छात्र आधुनिक धारा में अध्ययन करते हुए अन्य विषय को भी सुलभ तरीके से प्राप्त करने योग्य हो जाते हैं ।

यह पाठ्यक्रम शब्दावली, उच्चारण, वाक्य रचना और क्रिया शब्दावली पर केंद्रित है। सम्पूर्ण वार्तालाप पाठ्यक्रम पूर्णतः संस्कृत माध्यम में संचालित होता है। यह बोलने का कौशल प्राप्त करने की एक सरलतम विधि है। इसलिए विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम में उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

एक छात्र के रूप में अर्जित संचार कौशल, भविष्य में शिक्षक के रूप में नियुक्ति और शिक्षण में बहुत उपयोगी होंगे। जो इसे दूसरों से पृथक् करता है। अत: संस्कृत अध्यापक का संस्कृत वार्तालाप प्राथमिक कर्तव्य है। वर्तमान में, विश्वविद्यालय प्रशासनिक विभागों में संस्कृत को पारित करने के लिए एक कार्य योजना तैयार कर रहा है। भविष्य में संस्कृत विश्वविद्यालय के सभी विभाग संस्कृत संभाषण से परिचित होंगे। विश्वविद्यालय द्वारा सदैव सभी को संस्कृत में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इससे अधिकारियों को विशेष प्रेरणा से संस्कृत में बातचीत करने का अवसर मिलता है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षक संस्कृत में बातचीत करें, जिससे परिसर का वातावरण संस्कृतमय हो जाए।